जयपुर का तमाशा लोकनाट्यः ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

*डॉ. पूजा सिरोला

शोध सारांश

जयपुर की लोक नाट्य शैली तमाशा अपनी ऐतिहासिक परम्पराओं का निर्वहन कर नवीन परिवर्तनों के साथ आज भी मनोरंजन के लिए प्रस्तुत है। 18वीं सदी से लेकर वर्तमान तक जयपुर राजपरिवार एवं तमाशा कलाकारों के योगदान ने इस शैली को जीवंत बनाए रखा। तमाशा लोक नाटय अपनी विशिष्टताओं के साथ दर्शकों को बांधे रखता है। इस शैली के उद्भव, विकास एवं निरंतरता में भट्ट परिवार का विशेष योगदान रहा है।

संकेत शब्द : तमाशा, ठुमरी, ख्याल, टप्पा, आखाड़ा

जयपुर का तमाशा लोकनाट्य : ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

राजस्थान में लोक जीवन के विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति के लिए लोकनाट्य रचे गये हैं और उनका अपने तरीके से मंचन किया जाता है। राजस्थान में रंगमंच अथवा लोक रंगमंच की गौरवशाली परम्परा रही है। यहां अनेक ऐसी कलाऐं और उन कलाओं को समर्पित कलाधर्मी, जातियां एवं घराने रहे जिन्होंने प्रदेश के लोकधर्मी रंगमंच को अपनी आजीविका के रूप में ना केवल विकसित किया, अपितु प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर को पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित, प्रसारित एवं संवर्द्धित भी किया। कुछ वर्षों से ऐतिहासिक, पौराणिक, लोक कथाओं के साथ वर्तमान राजनीति एवं शासन व्यवस्था को भी लोक कलाकारों द्वारा लोक नाट्यां में व्यक्त किया जाने लगा है।

भारत वर्ष के लोकनाट्यों के अन्तर्गत राजस्थान के लोकनाट्य अपनी विशेष पहचान रखते हैं जिनमें स्वांग, रम्मत एवं विभिन्न प्रकार के ख्याल आते हैं, इन्हीं ख्यालों में से जयपुरी ख्याल अर्थात जयपुर की लोक नाट्य शैली तमाशा का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है।

जयपुर की तमाशा शैली का उद्भव एवं विकास

तमाशा शैली का प्रादुर्भाव 18वीं सदी में जयपुर में प्रारम्भ हुआ। मध्यकालीन भारत में इस्लाम के प्रभाव स्वरूप संस्कृत का लोप होने लगा इसी के साथ संस्कृत रंगमंच भी प्रकाश में नहीं थे। दक्षिण भारत से महाप्रभु वल्लभाचार्य अपने कुछ शिष्यों के साथ भक्ति यात्रा पर निकले। यह भक्ति यात्रा विभिन्न प्रान्तों से होती हुयी जब मध्य, उत्तर एवं पश्चिम भारत तक पहुँची तब तक ये यात्रा अपने विकसित रूप के साथ भक्ति आन्दोलन में परिवर्तित हो गई। महाप्रभु वल्लभाचार्य जी के साथ सुदूर दक्षिण प्रान्त में तैलंगाना से आये भट्ट परिवार के लोग उत्तर भारत में बुलन्द शहर, खुर्जा और आगरा के आसपास अवस्थित हो गये।[1] यह लोग कथा गायन के साथ काव्यात्मक प्रश्नोत्तरी भी किया करते थे, धीरे–धीरे ये काव्यात्मक प्रश्नोत्तरी आगरा के आस–पास काफी प्रसिद्ध हुयी तथा भट्ट परिवारक के अतिरिक्त भी कई लोग काव्यात्मक प्रश्नोत्तरी के दल बनाकर विभिन्न मन्दिरों में इसका प्रदर्शन करने

लगे।[2] मुगल बादशाह औरंगजेब के काल में संगीत एवं कला का पतन प्रारम्भ हुआ परिणामस्वरूप कला और संगीत को मुगल दरबार से निष्कासित कर दिया गया।[3] बादशाह औरंगजेब के काल में मंदिरों को तोड़ा जाने लगा, इस कारण काव्यात्मक प्रश्नोत्तरी करने वाले कलाकारों पर भी अत्याचार होने लगा। जिससे आहत होकर यह कलाकार आगरा से विस्थापित हुए तथा राजस्थान के विभिन्न प्रान्तों में निवास करने लग गए। काव्यात्मक प्रश्नोत्तरी करने वाले कलाकार लोक कला से स्वयं की कला को जोड़कर नई शैलियों को जन्म देने लगे इन्हीं में से एक थे पंडित रेवती रमण भट्ट[4] जिन्हें तत्कालीन जयपुर महाराजा प्रतापसिंह (1778–1803 ई.) ने प्रश्रय दिया और यहीं से जयपुर में लोकनाट्य परम्परा का प्रारम्भ हुआ।[5] इन्हीं रेवती रमण भट्ट के पुत्र बंशीधर भट्ट (1833–1880 ई.) जयपुर तमाशा शैली के जनक थे।[6]

तमाशा के प्रवर्तक बंशीधर भट्ट ने तमाशों की रचना में समाज के सांस्कृतिक और कलात्मक मूल्यों को ध्यान में रखकर तमाशों का लेखन किया। बंशीधर भट्ट जयपुर राजघराने के गुणीजन खाने के गायक थे, उनके द्वारा सवाई रामसिंह द्वितीय (1835–1880 ई.) की आज्ञानुसार विभिन्न गायकों द्वारा प्रदर्शित की गई रचनाओं में तुरन्त ही स्वरचित पद का निर्माण करने थे।[7] विशाल भट्ट (रंगमंच तथा तमाशा कलाकार) के अनुसार बंशीधर भट्ट ने 52 प्रकार के तमाशों की रचना की जिनका प्रदर्शन जयपुर नगर के विभिन्न स्थानों पर किया जाता था। इन 52 तमाशों में से अनेक तमाशों की पाण्डुलिपि वर्तमान में भी जयपुर राजपरिवार के पोथीखाने में सुरक्षित है।[8] सवाई रामसिंह के प्रोत्साहन एवं संरक्षण के कारण बंशीधर भट्ट तमाशा लोक नाट्य को काफी विकसित कर लिया, किन्तु प्रदर्शन एवं गायकी के क्षेत्र में विकास शेष था।

तमाशा मे गायन कला के विकास का प्रारम्भ बंशीधर भट्ट के पुत्र ब्रजपाल भट्ट ने किया।[9] ब्रजपाल भट्ट (1880–1919) की बचपन से ही संगीत कला में रूचि होने के कारण शीघ्र ही 'तमाशा शैली' की गायकी को समझने लगे और कुछ नवीन प्रयोग करने लगे। ब्रजपाल भट्ट जब राजदरबार में जाते तो वहाँ प्रदर्शन के लिये आये गायकों की गायकी को सुनते और बंशीधर जी से उस गायकी की शैली का उचित प्रशिक्षण प्राप्त कर तमाशा के अन्तर्गत उसका प्रयोग किया करते थे।[10] तमाशा गोपीचंद, रांझा हीर, जोगी जोगन जैसे तमाशों में उन्होंने टप्पा शैली, ठुमरी गायन का उपयोग कर इसे ओर अत्यधिक आकर्षक बनाया। ब्रजपाल भट्ट के युग में तमाशा शैली में गायन पक्ष को ही नहीं बल्कि अभिनय पक्ष को भी मनमोहक तरीके से प्रदर्शित किया गया। तत्कालीन समाज के विभिन्न पक्षों को तमाशा लोकनाट्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाने लगा।[11] इस शैली में रोचक तथ्यों को शामिल किया जाने लगा जिसने जयपुर की जनता को लोकनाट्य के प्रति आकर्षित किया।

ब्रजपाल भट्ट के पश्चात् फूल जी भट्ट (1904–1936 ई.) तथा मन्नू जी भट्ट (1936–1965 ई.) ने तमाशा शैली को संवर्धित करने के लिए अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फूल जी की गायकी से प्रभावित होकर इस शैली के प्रशंसकों ने तमाशा सीखने एवं प्रदर्शन करने में अपनी रूचि प्रदर्शित करी। फूलजी भट्ट द्वारा अपने छोटे भाई मन्नू जी भट्ट के साथ मिलकर तमाशा कला का प्रदर्शन करने के इच्छुक लोगों को तमाशा कला का प्रशिक्षण देना प्रारम्भ किया।[12] भट्ट परिवार द्वारा प्रदर्शित किये जाने वाले तमाशे के परम्परागत अखाड़ों, छोटा अखाड़ा, बड़ा अखाड़ा, आमेर, बारह भाईयों का चौराहा, ताड़केश्वर मंदिर आदि स्थानों के अतिरिक्त जयपुर नगर की विभिन्न गली मोहल्लों में भी तमाशे होने लगे।[13] फूल जी भट्ट तथा मन्नू जी भट्ट से तमाशा का प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले कलाकारों में पन्नालाल, धन्ना लाल, नानजी उस्ताद, कल्याण शुक्ल, विजयलाल माली इत्यादि कलाकार थे।[14] फूल जी भटट की योग्यता और तमाशा का प्रस्तुति की वजह से गायकी एवं प्रदर्शन परम्परा का तो विस्तार हो रहा था परन्तु अभिनय के साथ भावों की अभिव्यक्ति इस काल में भी गौण थी।

तमाशा शैली में अभिनय के द्वारा शब्दों एवं भावों के मर्म को प्रकट करने का श्रेय मन्नू जी भट्ट को जाता है। मन्नू

जी के समय से ही तमाशा कला में एक नये युग का सूत्रपात हुआ। तपन भट्ट (रंगमंच तथा तमाशा कलाकार) के अनुसार इस दौरान सम्पूर्ण भारत में पारसी नाटक का प्रदर्शन देखने को मिलता था, जयपुर भी पारसी नाटक के प्रभाव से अछूता नहीं था। पारसी नाटक में लोक प्रचलित संगीत नृत्य के अलावा अभिनय की प्रमुखता से स्थान रखता था। पारसी नाटकों की प्रस्तुति देखकर मन्नु जी भट्ट के मन में तमाशा की गायन, वादन, नृत्य की श्रंखला में अभिनय पक्ष को भी जोड़ने का विचार आया।[15] मन्नू जी भटट द्वारा गायकी के भावों को समझ कर अभिनय में संजोने का प्रयास किया जो अत्यधिक सफल रहा।

उस समय जयपुर की तवायफे भी तमाशा देखने आती थी और इस कला को सीखने की इच्छा प्रकट करती थी। तब मन्नू जी ने ही कुछ तवायफों को संगीत शिक्षा के साथ–साथ तमाशा कला की भी शिक्षा प्रदान की गई। मन्नू जी भटट ने ही जयपुर की मशहूर तवायफ गौहरजान से जयपुर के विभिन्न अखाड़ों में तमाशे में स्त्री पात्र की भूमिका करवा कर पुरूषों द्वारा ही स्त्री पात्र किये जाने की परम्परा को परिवर्तित किया।[16] लेकिन यह परिवर्तन अधिक समय तक देखने को नहीं मिला कुछ प्रस्तुतियों के पश्चात् ही पूर्व की भांति तमाशा कला का प्रदर्शन किया जाने लगा। स्त्री पात्रों की भूमिका का निर्वहन पुनः पुरूषों द्वारा ही होने लगा। इस कला के कथानक की ओर अधिक रोचक बनाने के लिये मन्नू जी भट्ट ने तमाशे की गायकी में गजल परम्परा को भी जोड़ा। रांझा–हीर तथा गोपीचंद जैसे तमाशों में वे कथानक से मिलती जुलती गजलों को प्रदर्शित किया करते थे। मन्नू जी के प्रयासों से ही 1964 ई. में 'वीणापाणि कला मन्दिर' नामक संस्था की स्थापना की गई जिसका आगे चलकर 1974–1975 में पंजीकरण भी करवाया गया।[17] इस संस्था के माध्यम से तमाशा शैली को ना सिर्फ संरक्षण का दायित्व सौंपा बल्कि इस कला के संवर्द्धन का दायित्व भी प्रदान किया। 1964 ई. से लेकर वर्तमान में भी यह संख्या तमाशा कला को संरक्षित किए हुए है।

मन्नू जी भट्ट के पश्चात् गोपी जी भट्ट (1950–2000 ई.) ने अपने चाचा मन्नू जी से तमाशा कला का प्रशिक्षण प्राप्त किया और इसे उन्नति की ओर ले जाने का कार्य किया। गोपी जी ने तमाशा की शिक्षा ग्रहण करने के साथ ही 'राजस्थान संगीत संस्थान' से संगीत की शिक्षा ग्रहण कर तमाशा शैली की गायकी में नवीन प्रयोग प्रारम्भ किये।[18] गोपी जी ने अपने चचेरे भाईयों के साथ मिलकर अपनी पारम्परिक कला का प्रदर्शन किया। मन्नू जी तथा फूल जी के पुत्रों द्वारा अपने पूर्वजों की परम्परा का निर्वाह किया गया तथा अपनी विरासत को ना सिर्फ अपने परिवार अपितु लोगों तक पहुंचा कर इसे जीवंत बनाए रखा।

समय के परिवर्तन के साथ ही राजपरिवारों का वर्चस्व समाप्त होने लगा और तमाशा के संरक्षण, संवर्धन का सम्पूर्ण दायित्व भट्ट परिवार के सदस्यों पर आ गया। जब वर्षों तक तमाशा कला को आर्थिक सहायता नहीं मिली तब 'वीणापाणि कला मंदिर' ने तमाशा कला को अग्रसर करने की जिम्मेदारी ली। संस्था के तत्कालीन सचिव वासुदेव भटट ने तमाशा दर्शकों से 1–1– तथा 2–2 रू. का चन्दा लेकर वर्षों तक छोटे अखाड़ों के तमाशे की परम्परा का निर्वहन किया तथा आमेर के तमाशे की जिम्मेदारी एक तमाशा समिति ने ले ली। तमाशा कला को जीवंत बनाए रखने में भटट परिवार के सदस्यों जगदीश भटट, दामोदर भट्ट, वासुदेव भट्ट और अरूण भटट (मन्नू जी भटट के पुत्र) को महत्वपूर्ण योगदान रहा लेकिन इस कठिनाई के दौर में तमाशा कला के संरक्षण एवं विकास में मन्नू जी भट्ट के तीसरे पुत्र वासुदेव भट्ट का अति महत्वपूर्ण योगदान रहा।[19]

तमाशा गुरू, रंगमंच व तमाशा कलाकार, लेखक वासुदेव भट्ट (1970–2000 ई.) का युग तमाशा कला के विकास में अतिमहत्वपूर्ण रहा। वासुदेव भट्ट ने तमाशा कला को इस दौर में संरक्षण प्रदान किया जब तमाशा कला लुप्त होने की अवस्था में थी। जयपुर राजपरिवार के संरक्षण के अभाव में भट्ट परिवार एवं तमाशा कला से संबंधित लोगों की आजीविका के लिए अन्य कार्य करने पड़े। इस तरह की नाजुक परिस्थितियों में जयपुर रंगमंच के प्रसिद्ध कलाकार

वासुदेव भट्ट ने तमाशा कला के संरक्षण और विकास की जिम्मेदारी ली। वासुदेव जी ने अपने अभिनय से वर्षों तक रंगमंच की शोभा बढ़ायी तब उनके मन में अपने परिवार की पारम्परिक धरोहर तमाशा के संवर्धन एवं परिष्करण का विचार आया।[20] वासुदेव भट्ट ने 'वीणापाणि कला मंदिर' संस्था के माध्यम से इस कला को आगे बढ़ाने की दिशा में कार्य किया। भट्ट जी अपने पूर्वजों की भांति पुनः तमाशा कला के प्रदर्शन एवं संवर्धन में लग गए। वासुदेव भट्ट के द्वारा कुछ परिवर्तन कर नवीनता लाने का प्रयास किया गया जिसमें पुनः स्त्री पात्रों को इस प्रदर्शन कला में स्थान दिया गया। इस दिशा में उन्होंने रंगमंच की प्रख्यात कलाकार पुष्पा व्यास तथा प्रसिद्ध ध्रुपद गायिका मधु भट्ट तैलंग को तमाशे के प्रदर्शन से जोड़ा।[21] भट्ट जी के द्वारा नवीन प्रयोगों के माध्यम से नए आख्यानों की रचना के लिए निम्न बातों पर ध्यान दिया गया।

- कथा या तमाशा की कहानी ऐतिहासिक, पौराणिक, धार्मिक, सामाजिक होनी चाहिए।
- कहानी का विषय शाश्वत हो।
- कहानी लोगों की जानी पहचानी अथवा अनुभव की हुई हो।[22]

वासुदेव भट्ट ने तमाशा शैली में नवीनता का समावेश कर इसे अत्यधिक रोचक और परिष्कृत बना दिया। भट्ट जी द्वारा अपने पुत्रों तपन भट्ट, विशाल भट्ट तथा सौरभ भट्ट को ना सिर्फ तमाशा कला से परिचित करवाया बल्कि प्रशिक्षित भी किया। भट्ट जी ने 'जयपुर तमाशा' एवं 'पांच तमाशे' नामक पुस्तक की रचना कर पारिवारिक विरासत को एक अलग पहचान देना का प्रयास किया।[23]

वासुदेव भट्ट से प्रशिक्षण प्राप्त कर नवीन पीढ़ी में इस समय जयपुर रंगमंच के रंगकर्मी तपन भट्ट (2000–वर्तमान) ने अपनी पारम्परिक विरासत का निर्वह किया। तपन जी द्वारा अपने रंगमंच के अनुभवों को तमाशा में भी प्रयोग में लाया गया और अपने परिवार के अन्य कलाकारों विशाल भट्ट, सौरभ भट्ट, दिलीप भट्ट, विनत भट्ट, कपिल इत्यादि के साथ मिलकर समय–समय पर तमाशा का प्रदर्शन किया गया। दिलीप भट्ट ने 'परम्परा नाट्य समिति' नामक संस्था की स्थापना की तथा इस संस्था के माध्यम से अपने परिवार की धरोहर को अग्रसर करने में अपनी भूमिका निभाई।[24]

'वीणापाणि कला मंदिर' एवं 'परम्परा नाटय समिति' पिछले कई वर्षों से तमाशा प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन करती आ रही है। इन संस्थाओं के तत्वावधान में समय–समय पर तमाशा कला का प्रदर्शन कर लोगों को इससे जोड़ने का प्रयास किया गया। भट्ट परिवार के सदस्यों के निरन्तर प्रयास के फलस्वरूप ही वर्तमान में परिवार की नवीन पीढ़ी इस कला एवं रंगमंच से जुड़ रही है। संवाद भट्ट, रिमझिम भट्ट, अनुज भट्ट अभिनव की बारकियों का प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रदर्शन कला के लिए तैयार हो रहे हैं।

सारांशतः यही कहा जा सकता है कि लोकनाट्य परम्परा में तमाशा शैली का प्रमुखता से स्थान है। इस कला को जयपुर राज्य, आमेर तमाशा समिति, सरकारी सहायता, रंगमंचीय प्रयासों के द्वारा वर्षों से प्रोत्साहन प्राप्त हुआ। जयपुर की तमाशा शैली के कलाकारों की जीवटता, मेहनत, निरन्तर कला संवर्धन, नवीन प्रयोगों के माध्यम से इसे ना सिर्फ पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाया अपितु परिष्कृत कर जनमानस के लिए रोचक एवं आकर्षक भी बनाया। भट्ट परिवार के सदस्यों ने महाराजा प्रताप सिंह के शासन काल से लेकर वर्तमान तक जयपुर में ही नहीं बल्कि राजस्थान के लोकनाट्य में तमाशा कला को एक अलग मुकाम प्रदान किया।

*व्याख्याता
इतिहास विभाग
एस.एस. जैन सुबोध गर्ल्स पी.जी. कॉलेज,
सांगानेर, जयपुर (राज.)

संदर्भ

1. प्रसिद्ध तमाशा कलाकार वासुदेव भट्ट से 19.06.2021 को लिये गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
2. हमीदुल्लाह : ख्याल भारमली, देवनगर प्रकाशन, जयपुर, 1998, पृ.सं. भूमिका VIII.
3. श्रीवास्तव, आर्शीवादी लाल, भारत का इतिहास (1000 से 1707 ई. तक), शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, पृ.सं. 617–618.
4. प्रसिद्ध तमाशा कलाकार तपन भट्ट से 19.06.2021 को लिये गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
5. नीरज जयसिंह, शर्मा भगवती लाल : राजस्थान की सांस्कृतिक परम्परा, राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2016, पृ.सं. 156
6. रंगमंच तथा तमाशा कलाकार विशाल भट्ट से 20.06.2021 को साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
7. भट्ट, वासुदेव : जयपुर तमाशा, देवनगर प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं. 51.
8. भट्ट, वासुदेव : पांच तमाशे, देवनगर प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं. 12.
9. रंगमंच तथा तमाशा कलाकार सौरभ भट्ट से 19.06.2021 को लिये गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
10. वहीं
11. वहीं
12. विशाल भट्ट से 23.06.2021 से वार्ता के आधार पर प्राप्त जानकारी के आधार पर।
13. वहीं
14. वासुदेव भट्ट से 19.06.2021 को साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
15. वहीं
16. वहीं
17. विशाल भट्ट से 23.06.2021 के साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
18. वहीं
19. तपन भट्ट से 24.06.2021 के साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
20. सौरभ भटट से 20.06.2021 को वार्ता से प्राप्त जानकारी के आधार पर।
21. वहीं
22. वहीं
23. विशाल भट्ट से 23.06.2021 के साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के आधार पर।